CHETANA
International Journal of Education (CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)
Impact Factor
SJIF 2026-8.584

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

प्रमुख सब्जियों के उत्पादन का बदलता परिदृश्यः राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर पर आकलन का अध्ययन

अमलेन्दु कुमार
सहायक प्राध्यापक, कृषि अर्थशास्त्र विभाग
ति0 कृ0 महा0, ढ़ोली, डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, बिहार, भारत
परांजल कनौजिया
पुष्प कृषि और भूदृश्य निर्माण, पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना, पंजाब, भारत
Email- amlendu99@gmail.com, Mobile- 9431205321

First draft received: 07.02.2026, Reviewed: 09.02.2026
Final proof received: 11.02.2026, Accepted: 15.02.2026

शोध-सारांश

बिहार देश में सभी मौसमों में उगाई जाने वाली विभिन्न प्रकार की सब्जियों का एक अग्रणी उत्पादक राज्य है। पिछले दशकों में राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर सब्जियों के क्षेत्रफल और उत्पादन में उल्लेखनीय दर से वृद्धि देखी गई है। हालांकि, क्षेत्रफल और उत्पादन में इस वृद्धि के बावजूद प्रति व्यक्ति सब्जी की अनुशंसित खपत की आवश्यकताओं को यह स्तर पूरा नहीं कर पाता है। पिछले दशकों में आय में वृद्धि के कारण लोगों की पसंद, स्वाद, आय और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता से सब्जियों के उत्पादन में काफी वृद्धि हुई है लोग अपने आहार में सब्जियों का अधिक व्यवहार करने लगें हैं। बड़ा सवाल आज यह है कि किस सब्जी फसल की मांग अधिक है और किसकी कम इसके आकलन का कोई लेखा जोखा उपलब्ध नही है। इसलिए, इस शोधपत्र को तैयार किया गया है जिसके पीछे मुख्य उद्देश्य सकल फसल क्षेत्रफल में उन सब्जियों का अध्ययन करना है जिनका खेती क्षेत्र विगत वर्षो में घटा है अथवा बढ़ा है इसका वास्तविक स्थिति को प्रस्तुत करना मुख्य उद्देश्य है। इस अध्ययन को द्वितीय स्तर के आंकड़ों जैसे सरकारी रिपोर्ट एवं अन्य प्रकाशित आकड़ों को उपयोग में लाया गया है।

एकत्रित आंकड़ों के विश्लेषण से यह पता चलता है कि राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर वर्ष 2004 से 2024 तक सभी सब्जियों के उत्पादन में लगातार वृद्धि हुई है, लेकिन यह वृद्धि विभिन्न सब्जियों में अलग–अलग पाई गई है। राष्ट्रीय और राज्य स्तर के विश्लेषण से पता चलता है कि कुछ सब्जियों के रकबे में गिरावट आई है, जो कि संभवतः उनके क्षेत्रफल में कमी के कारण है, जबकि उत्पादन में वृद्धि उनके क्षेत्रफल और उत्पादकता में वृद्धि या दोनों के कारण हुई है। सब्जी फसलों के मुख्य मौसम में जब अत्यधिक उत्पादन होता है और विपणन योग्य अधिशेष बहुत अधिक होता है, तब सब्जियों की कीमतें बहुत तेजी से गिर जाती हैं, कभी–कभी उत्पादन लागत कम होने पर भी ऐसा देखा जाता है। इस स्थिति में किसान अगले मौसम में सब्जी की फसल बदलने और अन्य फसलों की खेती करने के लिए विवश हो जाते हैं। बाजार में सब्जियों की भारी मात्रा में आपूर्ति के कारण उपज की कीमतों में भारी उतार–चढ़ाव होते रहता है, इस कारण से सब्जियों की कीमतें बहुत अस्थिर हो जाती हैं। बिहार राज्य, उत्तरी बिहार एवं दक्षिणी बिहार दो हिस्सों में बँटा हुआ है जिसमें उत्तरी बिहार, जो सब्जियों के उत्पादन का प्रमुख क्षेत्र है। इस क्षेत्र में भी पिछले कुछ वर्षों में सब्जियों के रकवा और उत्पादन में बढ़ोतरी देखी जा सकती है। अध्ययन में देश और राज्य में सब्जियों के रकबे को बनाए रखने और बढ़ाने के लिए कई उपाय सुझाए हैं। इनमें मुख्य उपाय जैसे पूर्व और पश्चात उत्पादन प्रबंधन, कटाई प्रक्रियाएं, ग्रेडिंग और विपणन प्रबंधन हैं, जो अभी भी इन क्षेत्रों में बहुत कम प्रचलित हैं और इनमें सुधार की आवश्यकता है। केंद्रीय, राज्य और स्थानीय स्तर के कृषि और बागवानी अधिकारियों से इस दिशा में पहल की आवश्यकता है जिससे आय अर्जित करने, रोजगार सृजित करने और जीवन स्तर में सुधार लाया जा सके।

मुख्य शब्द : *परिदृश्य, परिवर्तन, प्रमुख, सब्जियाँ, बिहार.*

प्रस्तावना

खाद्य अर्थव्यवस्था में प्रधानता के बावजूद, देश और बिहार राज्य में कुल फसल क्षेत्र में सब्जियों का एक महत्वपूर्ण स्थान है। हाल के वर्षों में, और कोविड–19 के बाद, सब्जियों के पोषण मूल्य के प्रति जागरूकता बढ़ने से सब्जी उत्पादन में जबरदस्त वृद्धि दर्ज की गई है। इसके पोषण मूल्य के कारण, देश भर में सब्जियों की खपत में उल्लेखनीय वृद्धि हुआ है। कम आपूर्ति और अधिक मांग के परिणामस्वरूप कई सब्जियों की कीमतें बढ़ रही हैं। यह एक लाभकारी सब्जी फसल है और रोजगार सृजन की क्षमता भी रखता है, इसलिए किसानों ने अनाज आधारित खेती को छोड़कर (विशेषकर सीमांत एवं लघु किसान) सब्जी की खेती की ओर अपना रुख विगत वर्षो में किया है। इसकी पुष्टि अनेकों शोधपत्रों के माध्यम से भी देखा जा सकता है।

चीन के बाद भारत विश्व में सब्जियों का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश है। 2024–25 के आंकड़ों के अनुसार, देश में 145.10 मिलियन टन सब्जियों का उत्पादन हुआ, जो विश्व के कुल उत्पादन (1171.28 मिलियन टन) का लगभग 12.39 प्रतिशत है। बिहार राज्य में, 0.89 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र में सब्जियों की खेती की जाती है और प्रतिवर्ष 17.60 मिलियन टन सब्जियों का उत्पादन होता है, जो राष्ट्रीय उत्पादन में लगभग 12.13 प्रतिशत का योगदान देता है। हमारे देश में मांग और आपूर्ति के अंतर का लाभ उठाने के लिए सब्जियों का अंतरराज्यीय आयात और निर्यात बहुत आम है। विशेष रूप से बिहार राज्य में, सब्जी की जल्दी खराब होने वाली प्रकृति और अनियोजित खेती पद्धतियों के कारण किसान सब्जी उत्पादन से उतना लाभ नहीं उठा पा रहे हैं। पिछले दशकों में राज्य में सब्जी उत्पादन का क्षेत्रफल सन 2007 के त्रिवर्षीय औसत के 7 लाख हेक्टेयर से बढ़कर सन 2025 के त्रिवर्षीय औसत तक 8 लाख हेक्टेयर हो गया है। इस दौरान उत्पादन में भी वृद्धि देखी हुई है, जो 11,644 हजार टन से बढ़कर 17,604 हजार टन हो गया है। इस तरह लगभग 17,604 हजार टन की वृद्धि हुई है। आँकड़े यह दर्शाते हैं कि सब्जी उत्पादन और खपत की मांग में लगातार वृद्धि हो रही है, फिर भी अनुशंसित मानक आवश्यकता से कम है। बिहार सरकार के बागवानी निदेशालय के आंकड़ों के अनुसार, फलों की खेती लगभग 24 प्रतिशत से कम क्षेत्र में की जाती है और बागवानी फसलों के कुल उत्पादन में फलों का हिस्सा लगभग 30 प्रतिशत है। इसी प्रकार, सब्जियों की खेती 58 प्रतिशत क्षेत्रफल में की जाती है और उत्पादन में इनका योगदान लगभग 55 प्रतिशत है। फूलों की खेती लगभग 2 प्रतिशत क्षेत्रफल में की जाती है और उत्पादन में इनका योगदान लगभग 2 प्रतिशत है। मसालों की बात करें तो, इनका

क्षेत्रफल भी 7 प्रतिशत है और उत्पादन में इनका योगदान 6 प्रतिशत है। मखाना, शहद और मशरूम का क्षेत्रफल लगभग 9 प्रतिशत है और उत्पादन में लगभग 7 प्रतिशत की भागेदारी है। राज्य में बागवानी फसलों के उत्पादन का प्रमुख केंद्र मुजफ्फरपुर, नालंदा, वैशाली, पटना, भागलपुर, गया, कटिहार, बेगूसराय और मिथिला क्षेत्र हैं। सब्जियों के क्षेत्रफल और उत्पादन पैटर्न में हुए परिवर्तनों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए यह अध्ययन किया प्रस्तावित है। इस अध्ययन का विशेष महत्व है क्योंकि हाल के वर्षों में राष्ट्रीय, राज्य और जिला स्तर पर सब्जी फसलों में अनेकों बदलाव हुए है जिसकी जानकारी का अभाव है अतः उत्पादन एवं रकवा की स्थिति का पता लगाना इस अध्ययन का व्यापक उद्देश्य है।

शोध पद्धति

इस अध्ययन के लिए, देश और बिहार स्तर पर उगाई जाने वाली विभिन्न प्रमुख सब्जी फसलों के अनुसार दो त्रिवर्षीय अवधियों के आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है इसके अलावा सन 2006–07 के त्रिवर्षीय औसत आँकडों से तुलना भी किया गया है। प्रत्येक स्तर पर बैंगन, पत्तागोभी, फूलगोभी, हरी मिर्च, भिंडी, प्याज, आलू, टमाटर, लौकी, परवल और अन्य प्रमुख सब्जियों को शामिल किया गया है। शोध में दर्शाये गये आंकड़े सरकारी स्रोतों से एकत्र किए गए है। विश्लेषण किए गए आंकड़ों को सरल सारणीबद्ध रूप में प्रस्तुत किया गया है ताकि सभी संबंधित पक्षों को निष्कर्ष आसानी से समझ में आ सकें। सारणीबद्ध दृष्टिकोण क्षेत्रफल और उत्पादन के प्रतिशत की गणना में भी सहायक होता है। अतः शोध को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत किया जा रहा है।

परिणाम एवं चर्चायें

भारत में सब्जी फसलों के अंतर्गत क्षेत्रफल

2019–20 से 2021–22 तक की त्रिवर्षीय औसत अवधि, 2022–23 से 2024–25 तक की त्रिवर्षीय औसत अवधि और 2019–20 से 2024–25 तक के संयुक्त आंकड़ों को दर्शाया गया है जिसे तालिका 1 में प्रस्तुत किया जा रहा है। तालिका से यह देखा जा सकता है कि 2019–20 से 2021–22 तक की त्रिवर्षीय अवधि और 2022–23 से 2024–25 तक की त्रिवर्षीय अवधि में बैंगन, पत्तागोभी, फूलगोभी, हरी मिर्च, प्याज, आलू, लौकी और परवल की खेती के अंतर्गत क्षेत्रफल में सकारात्मक वृद्धि पाई गई, जबकि केवल टमाटर की खेती में नकारात्मक वृद्धि दर्ज की गई है। एकत्रित आंकड़ों से पता चलता है कि आलू की खेती सबसे अधिक 20.20 प्रतिशत क्षेत्र में हुई, उसके बाद प्याज की खेती 15.36 प्रतिशत, टमाटर की 7.41 प्रतिशत और बैंगन की 6.31 प्रतिशत हुई। तालिका और ग्राफ से स्पष्ट है कि शेष सब्जियां देश में कुल सब्जी उत्पादन क्षेत्र के 5.0 प्रतिशत से कम क्षेत्र में उगाई जाती हैं। आलू और प्याज महत्वपूर्ण सब्जियां होने के कारण देश के वाणिज्यिक फसल मानचित्र पर प्रमुख स्थान रखते हैं क्योंकि अनाज और दालों की तरह ये भी लोगों के दैनिक आहार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं और इनकी मांग पूरे वर्ष एक समान रहती है। तीन वर्षों की अवधि के दौरान देश में सब्जियों की खेती में लगभग 569 हजार हेक्टेयर क्षेत्र की वृद्धि हुई। अन्य सब्जियों में मटर, अरबी, लोबिया, मूली, शलजम ब्रोकली, लौकी, शिमला मिर्च, खीरा और अन्य पत्तेदार सब्जियों के क्षेत्र में भी अच्छी वृद्धि हुई है। सिर्फ बैंगन को छोड़कर सब्जियों के रकवा में वृद्धि देश में सब्जियों की बढ़ती मांग को दर्शाती है।

सारणी 01 : भारत में विभिन्न सब्जी फसलों के अंतर्गत क्षेत्रफल (त्रिवर्षीय अवधि, 2021–22 से 2024–25 तक)

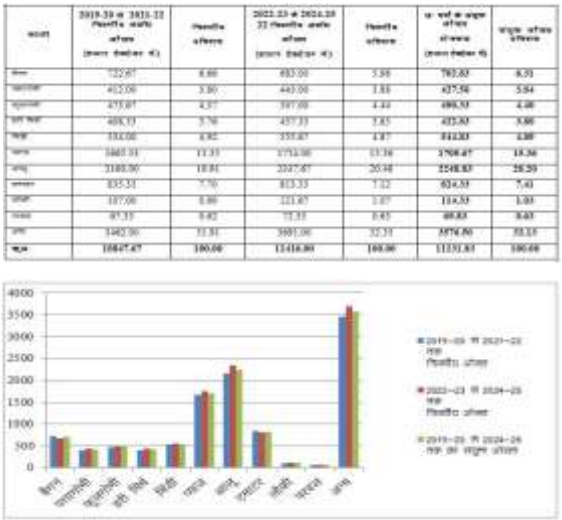

स्रोतः कृषि सांख्यिकी सारांश (2020–21 और 2024–25) के विभिन्न अंकों से संकलित आंकड़े, कृषि एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

भारत में विभिन्न सब्जियों का उत्पादन

सारणी 02 में विभिन्न सब्जियों के उत्पादन का आँकड़ा प्रस्तुत किया जा रहा है जो बताता है कि वर्ष 2021–22 से 2024–25 तक की तीन वर्षीय अवधि के दौरान देश में व्यापक रूप से उगाई जाने वाली सब्जियों के उत्पादन रुझान प्रस्तुत किए गए हैं। तालिका से पता चलता है कि टमाटर को छोड़कर सभी सब्जियों का उत्पादन वर्ष 2021–22 की तीन वर्षीय अवधि की तुलना में अधिक था, जबकि टमाटर का उत्पादन नकारात्मक रहा। फूलगोभी, हरी मिर्च, भिंडी, आलू, लौकी और परवल के उत्पादन में सबसे अधिक वृद्धि देखी गई। उत्पादन में यह वृद्धि संभवतः देश भर में इनकी पौष्टिकता के प्रसार के कारण बढ़ती मांग और मौसमी और गैर–मौसमी सब्जियों के प्रति लोगों की पसंद के कारण हुई है। देश में, दो तीन वर्षीय अवधियों के बीच विभिन्न सब्जियों के उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई, अर्थात् लगभग 25676 हजार टन सब्जियों का उत्पादन बढ़ा। सब्जियों के संयुक्त उत्पादन आंकड़ों से पता चलता है कि कुल सब्जी उत्पादन में आलू का हिस्सा काफी अधिक यानी 16.15 प्रतिशत है इसके बाद प्याज का 8.15 प्रतिशत और टमाटर का 5.94 प्रतिशत है। अन्य प्रकार की सब्जियां, जिनकी खेती बहुत कम क्षेत्रों में होती है, देश की कुल उत्पादित सब्जियों की सब्जी उत्पादन टोकरी में लगभग 56 प्रतिशत हिस्से का योगदान दे रहे हैं।

सारणी 2 : भारत में विभिन्न प्रकार की सब्जियों का उत्पादन (त्रिवर्षीय अवधि 2021–22 से 2024–25 तक)

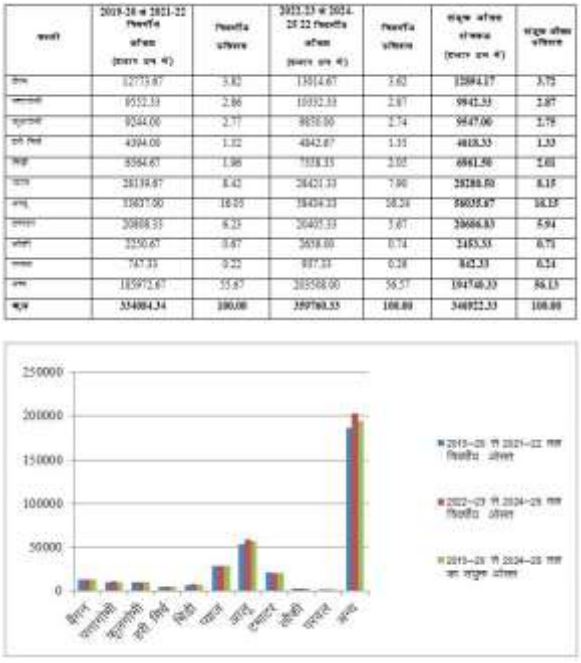

बिहार में विभिन्न सब्जी फसलों के अंतर्गत क्षेत्रफल

देश में सब्जी उत्पादन में बिहार राज्य का एक अति महत्वपूर्ण स्थान है। राज्य की विविध कृषि–जलवायु परिस्थितियों और उपजाऊ मिट्टी के कारण यहाँ तीनों मौसमों में सब्जी की खेती अच्छी मात्रा में की जाती है। 2021–22 से 2024–25 तक की त्रिवर्षीय आँकडे देखने से यह पता चलता है कि पत्तागोभी, फूलगोभी, हरी मिर्च, आलू, टमाटर और परवल के क्षेत्रफल में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जबकि बैंगन और प्याज के क्षेत्रफल में उल्लेखनीय गिरावट देखी गई है। सारणी 03 से यह भी पता चलता है कि भिंडी का क्षेत्रफल 2024–25 तक की त्रिवर्षीय अवधियों में लगभग स्थिर रहा है। क्षेत्रफल के संयुक्त आंकड़ों से पता चलता है कि आलू कुल फसल क्षेत्र में सबसे अधिक हिस्सेदारी 16.15 प्रतिशत है। इसके बाद फूलगोभी 7.71 प्रतिशत, भिंडी 6.75 प्रतिशत, टमाटर 6.68 प्रतिशत, प्याज 6.56 प्रतिशत, बैंगन 6. 47 प्रतिशत और हरी मिर्च 5.35 प्रतिशत का हिस्से पर अपना अधिपत्य जमाये हुये है। सारणी 03 से यह ज्ञात होता है कि पिछले 6 वर्षों में ये सात सब्जियाँ राज्य में सब्जी के सकल क्षेत्रफल (जीसीए) का लगभग 76.09 प्रतिशत हिस्सेदारी हैं। इन फसलों के क्षेत्रफल में वृद्धि का कारण उपभोक्ताओं की मांग के साथ–साथ लगातार सूखे एवं बाढ़ के प्रकोप, जिससे अजीविका में तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है इस स्थिति में सब्जी उत्पादन किसानों के लिये अनुकूलन रणनीति साबित हो रही है। वर्ष 2005–06 में नई राज्य सरकार के गठन के बाद कृषि परिदृश्य में सुखद बदलाव आया है और राज्य में कृषि निर्वाह अब पारंपरिक खेती से व्यावसायीकरण की ओर अग्रसर है।

सारणी 03: बिहार में विभिन्न सब्जी फसलों के अंतर्गत क्षेत्रफल (वर्ष 2021–22 से 2024–25 तक की त्रिवर्षीय अवधि)

सब्जी	2019-20 से 2021-22 त्रिवर्षीय अवधि औसत (हजार हेक्टेयर में)	त्रिवर्षीय प्रतिशत	2022-23 से 2024-25 त्रिवर्षीय अवधि औसत (हजार हेक्टेयर में)	त्रिवर्षीय प्रतिशत	संयुक्त औसत क्षेत्रफल (हजार हेक्टेयर में)	संयुक्त औसत प्रतिशत
बैंगन	60.50	6.74	55.37	6.19	57.93	6.47
पत्तागोभी	41.63	4.64	42.38	4.74	42.00	4.69
फूलगोभी	68.50	7.63	69.76	7.80	69.13	7.71
हरी मिर्च	47.30	5.27	48.48	5.42	47.89	5.35
भिंडी	60.47	6.73	60.49	6.77	60.48	6.75
प्याज	59.10	6.58	58.50	6.54	58.80	6.56
आलू	325.90	36.33	329.41	36.83	327.65	36.57
टमाटर	55.47	6.18	64.21	7.18	59.84	6.68
लौकी	44.00	4.90	44.93	5.03	44.46	4.96
परवल	9.27	1.03	10.77	1.20	10.02	1.12
अन्य	125.67	14.00	109.72	12.27	117.69	13.13
कुल	897.80	100.00	894.03	100.00	895.93	100.00

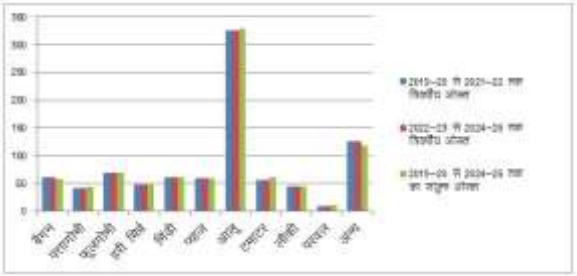

बिहार में विभिन्न सब्जियों का उत्पादन

राज्य में वर्ष 2021–22 से 2024–25 तक की त्रिवर्षीय अवधियों के औसत आँकड़ें सब्जियों के उत्पादन को सारणी 04 में प्रस्तुत किया गया हैं। सारणी से यह स्पष्ट है कि वर्ष 2021–22 से 2024–25 तक की त्रिवर्षीय अवधियों के दौरान राज्य में प्रमुख सब्जियों के उत्पादन में उत्साहजनक वृद्धि हुई है। सारणी 04 से यह पता चलता है कि उपरोक्त त्रिवर्षीय अवधियों के दौरान फूलगोभी, टमाटर, लौकी और परवल के उत्पादन में सबसे अधिक वृद्धि देखी जा सकती है। इसका मुख्य कारण त्योहारों, सामाजिक समारोहों, विवाह समारोहों आदि जैसे विभिन्न अवसरों पर उपभोक्ताओं द्वारा इन सब्जियों की अच्छी कीमत पर उच्च मांग का होना है। इससे किसानों को अधिक मात्रा में उत्पादक सामग्री का उपयोग करके और फसल के क्षेत्रफल को बढ़ाकर उत्पादकता बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन मिला है। सारणी 04 में पुनः विभिन्न सब्जियों के उत्पादन के संयुक्त आंकड़े को भी दर्शाया गया हैं एवं इसमें देखा जा सकता है कि कुल सब्जियों में आलू का उत्पादित हिस्सा काफी अधिक 49.47प्रतिशत है इसके बाद प्याज का 7.59 प्रतिशत, बैंगन का 6.93 प्रतिशत, टमाटर का 6.81 प्रतिशत और फूलगोभी का 6.38 प्रतिशत हिस्सा है। राज्य की कुल सब्जियों में उपर्युक्त वर्णित सब्जियों का कुल हिस्सा 77.18 प्रतिशत है। शेष सब्जियों का कुल सब्जी उत्पादन में योगदान बहुत कम है क्योंकि उपभोक्ताओं द्वारा सभी मौसमों में इनकी मांग सीमित रहती है। वर्ष 2024–25 की अवधि में लगभग 704.82 हजार टन सब्जियों का उत्पादन हुआ। इससे स्पष्ट रूप से पता चलता है कि अध्ययन अवधि के दौरान बिहार में सब्जियों के उत्पादन में समग्र वृद्धि हुई है। फूलगोभी, टमाटर, लौकी, परवल और आलू के उत्पादन में वृद्धि का कारण वर्ष दर वर्ष उत्पादकता में वृद्धि है, बैंगन के उत्पादन में कमी का कारण इसके उत्पादन रकवा में कमी का होना है।

सारणी 04: बिहार में विभिन्न प्रकार की सब्जियों का उत्पादन (वर्ष 2021–22 से 2024–25तक की त्रिवर्षीय अवधि)

सब्जी	2019-20 से 2021-22 त्रिवर्षीय औसत (हजार टन में)	त्रिवर्षीय प्रतिशत	2022-23 से 2024-25 22 त्रिवर्षीय औसत (हजार टन में)	त्रिवर्षीय प्रतिशत	संयुक्त औसत उत्पादन (हजार टन में)	संयुक्त औसत प्रतिशत
बैंगन	1282.20	7.43	1156.47	6.44	1219.33	6.85
पत्तागोभी	725.33	4.21	777.00	4.33	751.27	4.27
फूलगोभी	1033.33	5.99	1213.99	6.76	1123.66	6.38
हरी मिर्च	484.63	2.81	488.69	2.73	487.18	2.77
भिंडी	818.27	4.74	852.13	4.75	835.20	4.74
प्याज	1332.63	7.72	1340.78	7.47	1338.70	7.59
आलू	8562.37	49.63	8854.12	49.31	8708.24	49.47
टमाटर	1025.77	5.95	1371.18	7.64	1198.47	6.81
लौकी	664.50	3.85	712.87	3.97	688.69	3.91
परवल	95.53	0.55	109.01	0.61	102.27	0.58
अन्य	1227.20	7.11	1079.58	6.01	1153.39	6.55
कुल	17251.97	100.00	17956.79	100.00	17604.38	100.00

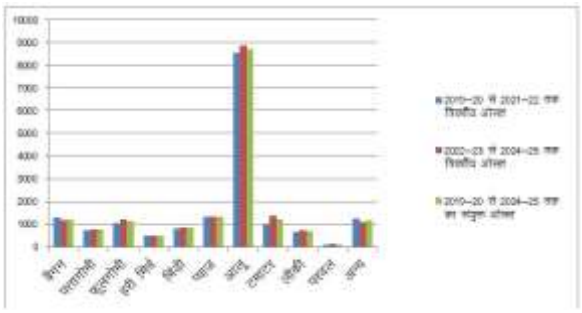

बिहार में 2004–05 से 2006–07 तक की त्रिवर्षीय अवधि में सब्जी का क्षेत्रफल

सारणी 05 में विभिन्न सब्जियों के अंतर्गत आने वाले क्षेत्रफल का उल्लेख किया गया है इसके पीछे मुख्य कारण यह है कि इस त्रिवर्षीय आँकड़ों को उपर्युक्त दर्शाये गये संयुक्त आकड़ें के साथ मिलान कर यह पता लगाना है कि वास्तव में सब्जी फसलों में कितना विस्तार हुआ है। सन 2024–25 के संयुक्त आँकड़ों को देखने से यह ज्ञात होता है कि राज्य में सब्जी के क्षेत्रफल और उत्पादन में कितना वृद्धि और कमी हुआ है। सारणी 05 से पता चलता है कि 2005 से 2007 तक की त्रिवर्षीय अवधि में बैंगन, पत्ता गोभी, फूलगोभी, हरी मिर्च, भिंडी, प्याज, आलू, टमाटर, लौकी और परवल के अंतर्गत क्षेत्रफल क्रमशः 54.07, 37.00, 60.14, 38.51, 56.63, 50.47, 322.85, 46.46, 29.37 और 4.85 हजार हेक्टेयर था, जो बढ़कर सन 2025 तक यह क्रमशः 57.93, 42.00, 69.13, 47.89, 60.48, 58.80, 327.60, 59.85, 44.46 और 10.02 हजार हेक्टेयर तक बढ़ गया है। सारणी 05 से पता चलता है कि बैंगन में 3. 86, पत्तागोभी में 5.00, फूलगोभी में 8.99, हरी मिर्च में 9.38, भिंडी में 3.85, प्याज में 8.33, आलू में 4.75, टमाटर में 13.38, लौकी में 15.09 और परवल में 5.17 हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल में वृद्धि हुई है। राज्य में कुल मिलाकर लगभग 71.73 हजार हेक्टेयर रकबा सब्जी की खेती में स्थानांतरित हुआ है, जिसका कारण सब्जियों की बढ़ती मांग या उपभोक्ता के उपभोग के तरीके में बदलाव हो सकता है। इस राज्य में विगत वर्षों में फूलगोभी, हरी मिर्च, प्याज, टमाटर और लौकी की खेती क क्षेत्रफल में अधिक वृद्धि हुई है। इसका कारण खेती से लाभ अथवा निरंतर माँग का होना है।

सारणी 05: बिहार में 2004–05 से 2006–07 तक की त्रिवर्षीय अवधि के दौरान विभिन्न सब्जियों के अंतर्गत क्षेत्रफल दर्शाती है।

सब्जी	2004–05 से 2006–07 तक त्रिवार्षिक औसत क्षेत्रफल (हजार हेक्टेयर में)	त्रिवर्षीय प्रतिशत
बैंगन	54.07	6.56
पत्तागोभी	37.00	4.49
फूलगोभी	60.14	7.30
हरी मिर्च	38.51	4.67
भिंडी	56.63	6.87
प्याज	50.47	6.12
आलू	322.85	39.17
टमाटर	46.46	5.64
लौकी	29.37	3.56
परवल	4.85	0.59
अन्य	123.82	15.02
कुल	824.17	100.00

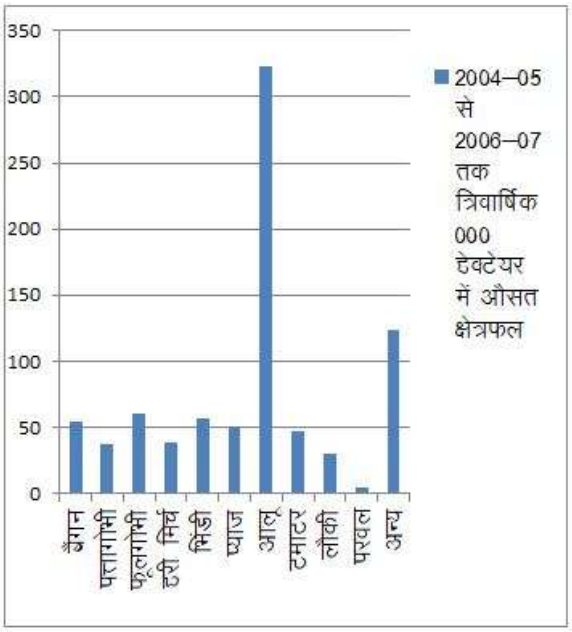

बिहार में वर्ष 2004–05 से 2006–07 तक की त्रिवर्षीय अवधि में सब्जी उत्पादन

सारणी 06 जिसमें विभिन्न सब्जियों के उत्पादन का आँकड़ा तुलनात्मक अध्ययन के उद्देश्य से उपयोग किया गया है सारणी 06 से स्पष्ट है कि वर्ष 2006–07 तक की त्रिवर्षीय अवधि के दौरान बैंगन, पत्तागोभी, फूलगोभी, हरी मिर्च, भिंडी, प्याज, आलू, टमाटर, लौकी और परवल का उत्पादन क्रमशः 1120.58, 623.46, 1008.98, 459.73, 716.32, 962.71, 5741.29, 910.77, 54. 25, 46.03 हजार टन था जो बढ़कर वर्ष 2024–25 के अवधि में क्रमशः 1219. 33, 751.27, 1123.66, 487.16, 835.20, 1336.70, 8708.24, 1198.47, 688.69 और 102.27 हजार टन हो गया। सारणी 06 से यह स्पष्ट है कि पिछले दो दशकों में सब्जियों के उत्पादन में काफी बढ़ोतरी हुयी है इनमें प्रमुख सब्जियों जैसे बैंगन (98.75 हजार टन), पत्तागोभी (127.81 हजार टन), फूलगोभी (114. 68 हजार टन), प्याज (373.99 हजार टन), आलू (2966.96 हजार टन), टमाटर (287.7 हजार टन) और परवल (56.24 हजार टन) की वृद्धि हुई है। इस अवधि के दौरान कुल उत्पादन में लगभग 3996 हजार टन की वृद्धि दर्ज की गई। उत्पादन में वृद्धि का मुख्य कारण क्षेत्रफल और उत्पादकता में विस्तार होना है।

सारणी 06: बिहार में वर्ष 2004–05 से 2006–07 तक की त्रिवर्षीय अवधि के दौरान विभिन्न सब्जियों का उत्पादन दर्शाती है।

सब्जी	2004–05 से 2006–07 तक त्रिवार्षिक औसत उत्पादन मीट्रिक टन में	त्रिवर्षीय प्रतिशत
बैंगन	1120.58	8.23
पत्तागोभी	623.46	4.58
फूलगोभी	1008.98	7.41
हरी मिर्च	459.73	3.38
भिंडी	716.32	5.26
प्याज	962.71	7.07
आलू	5741.29	42.19
टमाटर	910.77	6.69
लौकी	54.25	0.40
परवल	46.03	0.34
अन्य	1964.36	14.43
कुल	**13608.48**	**100.00**

उत्तरी बिहार के विभिन्न जिलों में सब्जी फसलों की स्थिति

बिहार को गंगा नदी दो भागों में विभाजित करती है। गंगा के दक्षिणी भाग को दक्षिणी बिहार एवं उत्तरी भाग को उत्तरी बिहार के नाम से जाना जाता है। उत्तरी बिहार में राज्य का 50 प्रतिशत से अधिक सब्जियों के उत्पादन में हिस्सेदारी है। इसका दृश्य सारणी 07 में प्रस्तुत किया गया है।

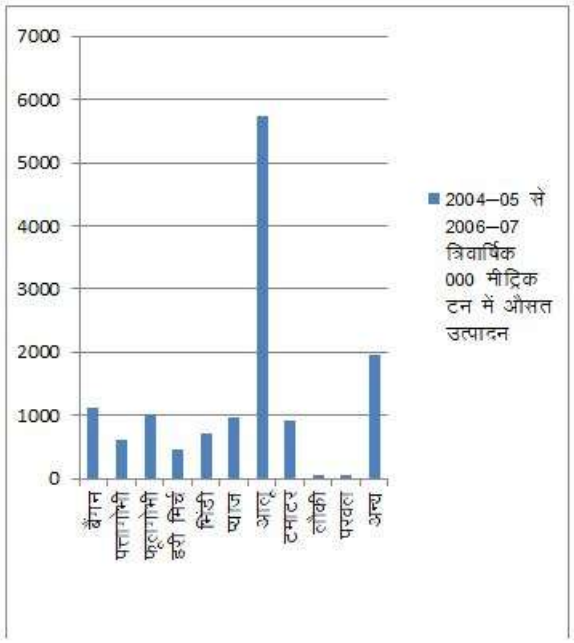

सारणी 07: उत्तरी बिहार के विभिन्न त्रिवर्षीय अवधि के दौरान जिलावार सब्जियों के क्षेत्रफल को दर्शाया गया है।

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	14441	17140	25800
[illegible]	12350	14136	23650
[illegible]	13050	14585	22200
[illegible]	19850	22148	28150
[illegible]	20186	22422	29000
[illegible]	27750	31578	37835
[illegible]	11700	13402	17500
[illegible]	4250	4848	9150
[illegible]	28850	32600	38950
[illegible]	10450	11232	14350
[illegible]	21050	22985	23900
[illegible]	16440	17712	21800
[illegible]	18150	20640	28250
[illegible]	18175	20778	22500
[illegible]	15873	17649	19550
[illegible]	7790	8346	11300
[illegible]	8850	8720	12250
[illegible]	24350	25920	28500
[illegible]	13150	14300	18200
[illegible]	15100	16513	17850
[illegible]	6050	6621	7250
कुल	[illegible]	[illegible]	[illegible]

सारणी 07 से यह देखा जा सकता है कि विभिन्न त्रिवर्षीय अवधियों में सब्जियों के क्षेत्रफल में लगभग 10.98 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। सारणी 07 से यह भी पता चलता है कि 2006–07 से 2024–25 तक कुल 36.77 प्रतिशत की क्षेत्रफल में वृद्धि दर्ज की गई है। यह उत्तरी बिहार के किसानों के बीच सब्जियों के उत्पादन में उत्साह के साथ–साथ माँग को दर्शाता है।

निष्कर्षः

प्रमुख सब्जी फसलों के क्षेत्रफल और उत्पादकता में वृद्धि के कारण भारत और बिहार में सब्जी उत्पादन में लगातार वृद्धि प्रदर्शित करता है। भारत विश्व में सब्जियों का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश है, जो प्रति वर्ष लगभग 9 करोड़ टन सब्जियों का उत्पादन करता था (सिरोही 2001)। जो आज भी सन् 2025 में चीन के बाद दूसरे स्थान पर बना स्थिर है। बैंगन को छोड़कर देश में सभी प्रमुख सब्जियों के उत्पादन में सकारात्मक वृद्धि दर्ज की गई है साथ ही साथ बैंगन के क्षेत्रफल में कमी का अवलोकन किया गया है इसका मूख्य कारण क्षेत्रफल में नकारात्मक वृद्धि होना है। बिहार में भिंडी और बैंगन को छोड़कर, पिछले वर्षों की तुलना में क्षेत्रफल और उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि देखा जा सकता है। अध्ययन अवधि के दौरान फूलगोभी, टमाटर और परवल के उत्पादन में सबसे अधिक वृद्धि दर्ज की गई। प्रमुख सब्जियों के क्षेत्रफल

और उत्पादन में वर्षवार परिवर्तन देखा गया है, जिसका कारण कीमतों में उतार–चढ़ाव, बाजार मध्यस्थों का मार्जिन, सब्जियों का जल्दी खराब होना और फसल कटाई के बाद बाजार का कमजोर बुनियादी ढांचा का होना है। इन समस्याओं के कारण बाजारों में अधिक उत्पाद आने के कारण किसानों को कम कीमत पर अपना उपज बेचना पड़ता है जिसके चलते वे अगले सीजन में सब्जी की खेती को किसी दूसरे फसल क्षेत्र में स्थानांतरित कर देते हैं। इन बाधाओं के कारण किसान पत्तेदार सब्जियों और अन्य छोटी सब्जियों की खेती को प्राथमिकता देते हैं। उत्तरी बिहार में विभिन्न त्रिवर्षीय अवधियों के बीच सब्जियों के क्षेत्रफल में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इसका मूख्य कारण उत्पादन से होनेवाले मुनाफा का होना है

सुझावः

देश भर के सब्जी उत्पादकों को सब्जियों की कटाई के बाद की प्रबंधन तकनीक उपलब्ध कराई जानी चाहिये ताकि क्षेत्र और उत्पादन की स्थिरता को सुनिश्चित किया जा सके।

सब्जी उत्पादन के लिए उपयुक्त क्षेत्रों में एक कुशल विपणन प्रणाली घरेलू और निर्यात बाजारों में सब्जी फसलों को बढ़ावा देने में सहायक हो ऐसी व्यवस्था होनी चाहिये

सब्जियों के क्षेत्र और उत्पादन को बढ़ाने के लिए, किसानों और सब्जी उत्पादक संगठनों का गठन किया जाना चाहिये जिससे किसान इसकी खेती के लिये अधिक प्रेरित हो सकें।

राज्य में, विशेष रूप से उत्तरी बिहार में, सब्जी विपणन के बेहतर प्रबंधन के लिए कोल्ड स्टोरेज, रेफ्रिजरेटेड वैन और चिलिंग पॉइंट जैसे विपणन संरचना को विकसित करने की आवश्यकता है जिससे यहाँ के किसान अपने उत्पाद को मंडियों में अच्छे मूल्य पर बेचा जा सके।

व्यवसायिक सब्जी उत्पादन को प्रोत्साहन के साथ प्रसंस्करण इकाई की स्थापना भी किसानों के आर्थिक एवं सामाजिक विकास मे सहायक हो सकता है।

संदर्भः

सिरोही, पी.एस. और सरकार, एम. (2001) सब्जियों का कटाई–पूर्व प्रबंधनरू सफलता की कुंजी, इंडियन हॉर्टिकल्चर, 46 (2)

कृषि सांख्यिकी एक नजर में (2020–21 और 2024–25) कृषि एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

बिहार आंकड़ों के माध्यम से 2011, अर्थशास्त्र एवं सांख्यिकी निदेशालय, बिहार, पटना

बागवानी सांख्यिकी एक नजर में, अर्थशास्त्र, सांख्यिकी एवं मूल्यांकन प्रभाग, कृषि एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 2021, 2022 और 2023 की रिपोर्टें।

बिहार आर्थिक सर्वेक्षण, वित्त विभाग, बिहार सरकार, पटना, विभिन्न अंक 2019–20, 2021–22, 2022–23, 2023–24 और 2024–25।